International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 0.899
Vol.3 No.6 July – Aug 2016

# कुछ अप्रचलित रागों के अभिव्यक्ति में पाई गई विविधता

**डॉ. गौरी एस. भट**

**पणजी गोवा**

**''योडयं ध्वनिवशेषस्तु स्वरवर्णविभूषितः**

**रंजको जनचित्तानां स रागःकथीलें बुधैः।।''**

अर्थात ध्वनि की इस विशिष्ट रचना को, जिसमें स्वर तथा वर्णों के कारण सौन्दर्य हो, जो मनुष्य के चित्त का रंचन करे, अर्थात जो श्रोताओं के मन को प्रसन्न करे, बुद्धिमान लोग इसे राग कहते हैं।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत मिश्र रागों से समृद्ध है। अनेक अप्रचलित रागों का प्रस्तुतीकरण विविध कलाकारों द्वारा होता है और इसे सुनने के बाद यह प्रतीत हुआ कि, एक ही राग के अनेक स्वरूप भी गाए–बजाए जाते हैं। एक राग के अनेकविध स्वरूप सामने आये, जिससे रागाभिव्यक्ति के साथ–साथ राग की गती, प्रकृती और वातावरण में भी फ़र्क पाया गया है।

प्रस्तुत आलेख में चुने गए राग इस प्रकार हैं:–

1. सम्पूर्ण मालकंस, 2. गौरी, 3.सरपरदा विलावल, 4. रामदासी मलहार, 5. सुग्राही इत्यादि।

**1. सम्पूर्ण मालकंसः–**

गांधार, धैवत और निषाद कोमल बाकी सब स्वर शुध्द, वादी मध्यम, संवादी षड्ज, जाति संपूर्ण और गायन समय है रात का तिसरा प्रहर। यह राग मालकंस का सम्पूर्ण स्वरूप है जिसमें ऋषभ और पंचम स्वरों को एक ढ़ंग से लगाना पड़ता है। ऋषभ और पंचम स्वरो के लगाव में फ़र्क आ जाने की वजह से इस राग के अभिव्यक्ति में बदलाव आता है। इस राग में दो स्वरूप इस प्रकार हैं:–

**(क) आरोह में ऋषभ और पंचम युक्त स्वरूपः–**

इस स्वरूप के आरोह में ''ऋषभ'' और ''पंचम'' का प्रयोग किया जाता है।

**राग–स्वरूपः–**

साSमगSमSगS रेगम S गSसा, रेरेसानी S सारेगमप S मगमS, ग S म S ध S नी S सां, सांSनीSधSमS, गम S गमप S मगS रेगS रेगमS गSसा।

यह स्वरूप खास करके जयपुर धराने में सुनाई देता है। ''प्र बरज रही'' यह विलंबित तीनताल में निबद्ध बंदिश अत्यंत प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत की जाती है।

''रेरेसानी – सारेगमप – मगम – म –– पपम –गम – गमप – म – प''

SSSS S SSSS S SSS S ब Sर जSS S SS S SSS S र S ही

इस तरह में ''पंचम'' पर ही इसकी 'सम' आती है। यह स्वरूप बक्र है जो ज्यादातर जयपुर घराने में गाया जाता है। यह बंदिश https:youtu.be/7JF9EBTpni4 पर प्राप्त कर सकते हैं। इसे गानसरस्वती किशोरी अमोणकरजी ने प्रस्तुत किया है।

**(ख) अवरोह में ऋषभ और पंचम युक्त स्वरूपः–**

इस स्वरूप में अवरोह में ''ऋषभ'' और ''पंचम'' का प्रयोग किया जाता है।

**राग–स्वरूपः–**

साग म SS गमधम, गमधनीसां, सांनी धपमगरे, गरे S गम S गSसा।

इस स्वरूप में 'ऋषभ' और 'पंचम' का प्रयोग अवरोह में किया जाता है। यह राग स्वरूप प्रा0 बी0 आर0 देवधरजी से प्राप्त हुआ है। ''हरी में कैसे खेलूं बसंत'' यह विलंबित एकताल की बंदिश बहुत ही लोकप्रिय है। ''प्रीतम प्यारे'' यह द्रुत त्रिताल में निबद्ध बंदिश इस स्वरूप में गायी जाती है। यह दो बंदिश मैने डा0 अलका देव मारूलकरजी से पाई है, जो जयपुर , ग्वालियर और किराना घराने की प्रख्यात गायिका है।

**निष्कर्षः–**

पहले स्वरूप में 'ऋषभ' और 'पंचम' का प्रयोग आरोह में करने की वजह से राग की गति बढ़ती है और इसका वक्रचलन रागस्वरूप को और भी सुंदर बनाता है। ऋषभ और पंचम के अवरोहात्मक प्रयोग के वजह से रागाभिव्यक्ति में श्रृंगारिकता आती है। आरोहात्मक स्वरूप में विशिष्ट स्वरसमुहों का ज्यादा विचार किया जाता है और अवरोहात्मक स्वरूप के स्वरों का विस्तार होता है। ऋषभ और पंचम के लगाव में फ़र्क आ जाने की वजह से रागाभिव्यक्ति में बदलाव आता है।

**2. राग गौरीः–**

यह संधिप्रकाश राग है जिसके तीन स्वरूप गाये जाते है जो इस प्रकार हैः–

**(क). पूर्वी थाट की गौरी(तीव्र मध्यम युक्त स्वरूप):–**

यह स्वरूप बहुत ही प्रचलित है और इसे पूर्वी अंग का राग माना गया है। ऋषभ और धैवत कोमल, मध्यम तीव्र, सब स्वर शुध्द, जाति संपूर्ण, वादी ऋषभ और संवादी पंचम, समय है सायंकालीन संधिप्रकाश

**राग स्वरूपः–**

सारे S नीसा S नीधनीS, नीरेगमे S, गरेग S, रेगमेपSS मेधनीसांS, रेंनी धपमेगरेग, रेगमेप S मे S ग, मेगरेग S रे S सा रेनी Sसा।

इस राग का मुख्य अंग ''सारे S नीसा S नीधनी'' इस तरह लिया जाता है और इसका यह प्रयोग गौरी के अन्य स्वरूपों के लिए भी चिन्ह सा माना गया है। मुख्य अंग को अबाधित रखते हुए, इस राग में और भी दो स्वरूप गाये जाते है, जो अलग थाट में इस प्रकार से आते हैंः–

**(ख). भैरव थाट की गौरीः–(शुद्ध मध्यम युक्त स्वरूप):–**

'ऋषभ' 'धवत' कोमल, बाकी सब स्वर शुद्ध, वादी कोमल ऋषभ, संवादी पंचम, जाति पाडव संपूर्ण। यह प्रातःकालीन संधिप्रकाश राग हैं। इसे 'सुबह की गौरी' या 'शुभ्रा गौरी' भी कहते हैं।

**राग स्वरूपः–**

साग S रेसाS नीसा S नीS, सागमप S मगमपधनी S धप, पनी SS रेसांनी S पनी S ध S प, नी S S धपमगमपध SS पमप SS मगरेग S सा, सारे S नीसा S नीधनी S ।

इसमें विलंबित तीनताल में रची बंदिश है, जिसके रचयिता है ग्वालियर, जयपुर और किराना के प्रसिद्ध गायक पं0 राजाभाऊ देव। 'जोगन मै तो भयी'' यह इस बंदिश का मुखड़ा है। यह बंदिश मैने पंडितजी से साक्षात्कार के दौरान पायी है।

**(ग) दोनों मध्यमों का गौरीः–**

दोनों मध्यम लेनेवाला गौरी का एक अलग प्रकार है। इसका चलन इस प्रकार हैः–

सा, सारेनी, धनी, सारे, रेग, रेम, गरेसा, रेनीसा, म, गम, मधप, म, रेग, ममेमग, रेसा, रे नीसा।

**निष्कर्षः–**

एक ही स्वर 'मध्यम' के बदल जाने से 'राग गौरी' के चलन में फ़र्क आता है जिससे वातावरण में भी फ़र्क आता है।

**3. सरपरदा बिलावलः–**

कोमल निषाद, बाकी सब स्वर शुध्द, जाति संपूर्ण, वादी षड्ज और संवादी पंचम है। गायन समय है दिन का प्रथम प्रहर। इस राग के दो स्वरूप पाये जाते हैं। प्रथम

स्वरूप में 'बिलावल' और 'गौडमल्हार' का मिश्रण पाया जाता है और द्वितीय स्वरूप में 'बिलावल' और 'गौडसारंग' का मिश्रण पाया जाता है। यह दो स्वरूप इस प्रकार हैः–

**(क) गौडमल्हार अंग युक्त स्वरूपः–**

यह स्वरूप बहुत ही प्रचलित है।

**राग स्वरूप**

सासारेगमS गमS रेपS, पधS धनीधप, पनीS नीSसां, धनीधप, धगS रेगप S मग S रेग S स, गरेगपधग S पमग S मग S रेग S सा।

इस स्वरूप का चलन वक्र है। इसमें दोनों निषादों का प्रयोग है और बाकी सब स्वर शुद्ध है। 'सागरेगपधग' 'गपनीधनीसां' यह स्वरसमूह बिलावल का है और ''सासारेगम S गम S गरेगसा'', ''सासारेगम S गम S रेप'' यह स्वरसमूह गौडमल्हार का है। ''मांडिया रवे मियां'' यह विलंबित एकताल की बंदिश , ''हो मियाँ सुणवा वीवे'' यह द्रुत त्रिताल की बंदिश बहुत ही प्रचलित हैं इसके रचयिता है पं0 विनायकराव पटवर्धन। इस बंदिश की भाषा पंजाबी है। यह दोनों बंदिशे मैनें अगरा घराने के प्रख्यात गायक पं0 वि0रा0 आठवलेजी से साक्षात्कार के दौरान पायी है।

**(ख) गौडसारंग अंग युक्त स्वरूपः–**

यह स्वरूप बहुत ही दुर्लभ है, जो इस प्रकार हैः–

**राग स्वरूपः–**

साग S रेगप S धग S रेगप S मग S रेग S रेमग S मरे S सा, सागरेगप SS , गपनीधनीसां SS धनीधप S धग रेग S रेम S ग Sमरे S सा।

इस राग स्वरूप का चलन वक्र है। ''सागरेगप S धग SS गपनीधनीसां'' यह स्वरसमूह बिलावल का है और ''रेग S रेमग S मरे S सा'' यह स्वरसमूह गौडसारंग का है। यह स्वरूप बहुत दुर्लभ है और मैंने यह स्वरूप आगरा घराने के बुजुर्ग गायक पं0 वि0रा0 आठवलेजी से पाया है। ''ए मानले मोरी बात'' यह विलंबित एकताल की बंदिश पंडितजी द्वारा रची हुई है।

**निष्कर्षः–**

दोनों स्वरूपों में 'बिलावल' का अंग अबधित होते हुए भी ''गौडमल्हार'' और गौडसारंग'' का मिश्रण खास ढ़ंग से किया जाता है जिससे, संपूर्ण स्वरूप में नवीनता आती है। गौडमल्हार अंग युक्त स्वरूप में, बिलावल के साथ गौडमल्हार का सुंदर मिलाप पाया जाता है जिससे यह वर्षाऋतुकालीन राग बनता है। गाडसारंग युक्त स्वरूप में दोपहर की सहजता प्रतीत होती है जिससे, वातावरण में फ़र्क आता है।

**4. राग भैरव–बहारः–**

भैरव और काफी थाट से उत्पन्न भैरव और बहार के मिश्रण से यह राग बनता है। यह एक मिश्र मेलोत्पन्न राग है और अल्प प्रचलित भैरव का प्रकार है। ऋषभ कोमल, दोनों निषाद, शेष स्वर शुध्द, जाति–सम्पूर्ण, वादी–मध्यम, संवादी–सहज और समय दिन का पहला प्रहर। इसके पूर्वांग में भैरव और उत्तरांग में बहार दिखाया जाता है। इस राग के भी दो स्वरूप पाये जाते हैं जो इस प्रकार हैंः–

**(क)पूर्वांग में भैरव और उत्तरांग में बहार युक्त स्वरूपः–**

सारेगमप SS गमनीध S नीपS, नीनीपमप S मगमS, गमनीधनीसांSS, नीपमSS, गमपSSगपममरेSरेSसा।

इस स्वरूप के पूर्वांग में भैरव का स्वरसमूह जैसे कि ''सारेगमपSगSम$^{म}$ रेS $^{म}$ रेS सा'' इस तरह से प्रयोग होता है। उत्तरांग में बहार अंग लगता है जैसे कि, ''गमनीधSनीप, नीनीपमपSमगमSगमनीधनीसां S नीपम'' इस तरह से प्रयोग होता है। कभी कभी सौन्दर्यवृद्धिके लिए उत्तरांग में ''धनीसांरेगंरेंसांनी'' इस तरह से 'बहार' का कोमल गांधार लगाया जाता है। अवरोह में वक्र गांधार ''गSगSमरेSमरेSसा'' इस तरह से आंदोलित ऋषभ भैरव अंग को स्पष्ट करता है और 'मधनीप' या 'सांनीप' और 'मनीधनीसां' इस प्रकार बहार अंग दिखाया जाता है। यह स्वरूप जयपूर, आगरा और किराना घराने की प्रख्यात गायिका डॉ0 अलकाजी देव मारूलकरजी से प्राप्त हुआ है। इस स्वरूप में डॉ0 अलकाजी से दो रचनाएँ पायी गई है। पहली विंबीत तीनताल में ''सरस सुगंध'' और दूसरी द्रुत एकताल में ''अब कैसे छूटे जइयो'' जो, इसी स्वरूप को दर्शाती है। यह बंदिशे उन्होंने खुद रची हुई है। इसे हम *https:youtu.be/RGDVtRfxbz4* से प्राप्त कर सकते हैं।

**(ख) पूर्वांग में बहार युक्त स्वरूपः–**

इस स्वरूप में बहार के 'कोमल गांधार' का प्रयोग पूर्वांग में किया जाता है। दोनों ऋषभ, दोनों गांधार बाकी सब स्वर शुध्द। यह स्वरूप आगरा घराने के प्रख्यात गायक पं0 वि0रा0 आठवलेजी से साक्षात्कार के दौरान पाया गया है।

**राग–स्वरूपः–**

सागमप S गमरेगरेसा SS, गमधनीसां S नीप S मगम S पमगरेगरेसा।

राग 'अरि–भैरव' इसे समप्रकृतिक होने के कारण 'पधनीसां' (काफी अंग अहिर भैरव) के बजाय 'मधनीसां'(बहार अंग भैरव बहार), यह स्वरसमूह प्रयोग होता है।

**निष्कर्षः–**

पहले स्वरूप के पूर्वांग में भैरव और उत्तरांग में बहार लिया जाता है। दूसरे स्वरूप के पूर्वांग में 'बहार' को दर्शाता कोमल गांधार के इर्दगिर्द राग घूमता है। इसलिए रागाभिव्यक्ति में फ़र्क दिखाई देता है। भैरव और बहार इन दो घटक रागों के मिश्रण से इस राग की निर्मिती हुई है, जिसमें भैरव के करूण रस के साथ–साथ बहार का श्रृंगार भाव भी उमड़ आता है।

**उपसंहार**

इसप्रकार और भी कई राग हैं जिनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया और निष्कर्ष निकाले गये। उदाहरणार्थ राग कौशी–कानडा अप्रचलित रागों में से एक है। इसके तीन स्वरूप पाये गये जो एक दूसरे से बिल्कुल ही स्वतंत्र हैं। पहले दो स्वरूप काफी मेलजन्य है जिसमें बागेश्री अंग को प्राधान्य दिया गया है। पहले स्वरूप में 'बागेश्री और नायकी' का मिश्रण है और दूसरे स्वरूप में 'बागेश्री और मालकंस' का मिश्रण है। तीसरा स्वरूप आसावरी मेलजन्य है जिसमें मालकंस अंग को प्रधान्य दिया गया है। इसमें मालकंस और कानडा का मिश्रण पाया गया है। राग रामदासी मलहार यह एक अप्रचलित प्रकार है। यह दो प्रकार से गाया जाता है। एक एक शुद्ध धैवत लेकर और दूसरा धैवत वर्ज करके यदि धैवत वर्ज किया जाए तो यह राग गौडमल्हार मियाँ मलहार और नायकी कानडा इन रागों के संयोग से बनता है, और शुध्द धैवत लिया जाए तो यह राग गौडमल्हार, मियां मल्हार और शहाना कानडा इन रागों के संयोग से बनता है। इसी प्रकार राग जैनकल्याण, कल्याण का प्रकार है। इसके दो स्वरूप प्रचलित है। पहला स्वरूप है युद्धकल्याण अंग युक्त स्वरूप और दूसरा स्वरूप है यमन अंग युक्त स्वरूप। इसी प्रकार नायकीकानडा, काफी–कानडा, देवगिरी बिलावल, पटविहाग इत्यादि अनेक अप्रचलित रागों में अलग–अलग स्वरूप पाये गये। इन विविध स्वरूपों के अध्ययन के दौरान मुझे यह ज्ञात हुआ कि यह भिन्न भिन्न राग बहुत ही विस्तारक्षम और भव्य है। इन स्वरूपों में अपना एक स्वतंत्र विचार है और इसीकारण यह और भी श्रवणीय बन गये है। इन सभी स्वरूपों का अध्ययन मैने तुलनात्मक और सौन्दर्यात्मक रूप से किया है। इस आलेख में समाविष्ट किये गये रागों के अलावा और भी इसतरह के रागस्वरूप है किंतु, मैंने इस शोधकार्य के लिए कुछ रागों का प्रतीकात्मक रूप में अभ्यास और विवरण प्रस्तुत किया है और ऊपर निर्देशित निष्कर्ष निकाले हैं। यह संशोधन खोज की एक नयी दिशा दर्शाता है और इसी कारण यह आलेख संगीत साधकों के लिए प्रेरणात्मक साबित होगा और इस दिशा में अधिक संशोधन करने की प्रेरणा मिलेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

**संदर्भः–**

1. ''नादवैभव''(स्वकृत राग व बंदिशी), पृ0क्र0 68, लेखक– पं0 वि0 रा0 आठवले।
2. ''राग विशाल'', चतुर्थ भाग, पृष्ठ क्र0 117, लेखक–पं0 विनायकराव पटवर्धन।

**संदर्भ ग्रंथ सूचीः–**


1. राग वैभवः खानदानी अप्रचलित बंदिशों का संग्रह — संकलनः पं0 वि0 रा0 आठवले; स्वरलेखन व राग परिचयः ग0सौ0 वैजयंती रा0 जोशी; प्रकाशक बलवंत जोशी
2. राग विज्ञानः — लेखकः पदमभूषण पं0 विनायकराव पटवर्धन; प्रकाशकः डा0 मधुसूदन पटवर्धन
3. श्रृति विलासः — लेखकः पं0 शंकर विष्णु काशीकर, प्रकाशकः संस्कार प्रकाशन, त्रिवेंद्रम संस्करण 1928, संपादितः के शाम्बशिवशास्त्री
4. नाद वैभवः (स्वकृत राग व बंदिशी) — लेखकः पं0 वि0 रा0 आठवले
5. भैरव के प्रकारः — लेखकः जयसुखलाल त्रि0 शाह(विनय); प्रकाशकः संगीत कार्यालय हाथरस
6. क्रमिक पुस्तक मालिकाः — लेखकः पं0 विष्णु नारायण भातखंडे, संपादकः डा0 लक्ष्मीनारायण गर्ग, प्रकाशकः संगीत कार्यालय हाथरस(उ0प्र0)